Lovecraft horror: The Ghost-Eater

भूत बँगला

एच.पी. लवक्राफ्ट

(सी.एम. एडी के साथ)

अनुवादक

जयदीप शेखर

Cover Photo Credit: Image by Vecstock on Freepik

भूत बँगला

अँग्रेजी डरावनी कहानी 'द घोस्ट-ईटर' (1924) का हिन्दी अनुवाद

लेखक

एच.पी. लवक्राफ्ट

(सी.एम. एडी के साथ)

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit

Image by Vecstock on Freepik

-: Hindi eBook :-

BHOOT BANGLA

(The Haunting Cottage)

Hindi translation of the English horror story 'The Ghost-Eater' (1924).

Original author: H.P. Lovecraft (1890-1937)

with C.M. Eddy, Jr. (1896-1967)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen Name: Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023: Translator

Published by:

JagPrabha

Barharwa (SBG), JH- 816101

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

Price: ₹ 50.00

***

भूत बँगला 5

जंगल का रास्ता..... 5

जंगल में बँगला..... 7

आदमखोर भेड़िया 12

भूतिया किंवदन्ती..... 15

परिशिष्ट 19

लेखक परिचय 19

एच.पी. लवक्राफ्ट का रचना-संसार..... 21

भूत बँगला

जंगल का रास्ता

चाँदनी रात का मतिभ्रम? बुखार का असर? काश कि मैं उस घटना को इसी रूप में ले पाता! लेकिन अपने घुमक्कड़ी स्वभाव के कारण जब कभी अन्धेरे में किसी वीरान जगह से मैं अकेले गुजर रहा होता हूँ, तो मुझे सन्नाटे को भेदकर आती खर्राटों एवं डरावनी चीखों की प्रतिध्वनियाँ और हड्डियाँ चबाये जाने की घिनौनी कड़मड़ाहट सुनायी पड़ने लगती हैं और मैं उस रात की बात याद कर सिहर उठता हूँ।

उन दिनों जंगल-विद्या के बारे में मैं कम जानता था, हालाँकि जंगल मुझे उसी तरह आकर्षित करते थे, जैसे कि आज करते हैं। उस रात के पहले तक मैं जंगल के रास्ते से गुजरने से पहले सावधानीवश एक पथ-प्रदर्शक ले लिया करता था, लेकिन उस रोज परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बनीं कि मुझे जंगल-विद्या का अपना खुद का हुनर आजमाना पड़ा। मेन[1] में यह गर्मियों का मध्यकाल था, अगले दिन के दोपहर तक मेरा मेफेयर से ग्लेनडेल पहुँचना अत्यावश्यक था, लेकिन उस दिन कोई भी व्यक्ति गाईड के रूप में मेरे साथ चलने के लिए राजी नहीं हुआ। दरअसल, इस बार मुझे पोटोविसेट वाले लम्बे रास्ते से नहीं जाना था– क्योंकि इससे मैं समय पर नहीं पहुँच सकता था; इस बार मुझे छोटे रास्ते से जाना था, जिसके बीच में एक घना जंगल पड़ता था। जिससे भी मैंने इस रास्ते का जिक्र किया, उसने कोई-न-कोई बहाना बनाते या टाल-मटोल करते हुए मेरे साथ चलने से इन्कार कर दिया।

---

[1] संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर-पूर्वी हिस्से को न्यू-इंग्लैण्ड कहा जाता है। इसमें छह राज्य शामिल हैं, उनमें से एक राज्य है– मेन (Maine)। यह मिसिसिपी नदी के उत्तर में स्थित है। प्रसंगवश एच.पी. लवक्राफ्ट न्यू-इंग्लैण्ड के ही वासी थे।

मुझे बड़ा अजीब लगा यह देखकर कि हर कोई छुट-पुट बहाने बना रहा था। एक ऐसे गाँव में, जहाँ फुर्सत ही फुर्सत हुआ करती थी– हर किसी के हाथ में उस दिन कोई-न-कोई "महत्वपूर्ण काम" आ गया था! हालाँकि मैं जान रहा था कि वे झूठ बोल रहे थे, लेकिन मेरे पास स्वीकार करने के अलावे और कोई चारा नहीं था कि सबके पास "अत्यावश्यक काम" थे। सबने बस यही सलाह मुझे दी कि उस जंगल से होकर गुजरने वाला रास्ता सीधा है– बस उत्तर की ओर नाक रखकर चलते चले जाओ और खास तौर पर मेरे-जैसे ऊर्जावान युवक के लिए तो यह जरा भी कठिन नहीं है। अगर मैं सुबह जल्दी रवाना हो जाऊँ– जैसा कि उन लोगों ने बताया, तो मैं सूरज ढलने तक ग्लेनडेल पहुँच जाऊँगा और खुले में रात बिताने की नौबत नहीं आयेगी। उस समय तक मुझे जरा भी सन्देह नहीं हुआ था, मुझे उनकी सलाह ठीक ही लगी और मैंने तय किया कि अकेले ही इस यात्रा को आजमाया जाय, पड़े रहें ये निठल्ले ग्रामीण गप्पें हाँकते हुए। अगर मुझे सन्देह हो भी जाता, तो भी मैं शायद अकेले यात्रा पर निकलने को आजमाता, क्योंकि एक तो मैं जवान था, जो ठान लेता था, वह करता था और दूसरे, अन्धविश्वास पर तथा नानी-दादी की कहानियों पर मैं हँसा करता था।

तो मैं दिन चढ़ने से पहले ही टहलते कदमों के साथ पेड़ों के बीच से रवाना हो गया; हाथ में दोपहर का खाना था, जेब में था मेरा संरक्षक ऑटोमेटिक और कमर पर बेल्ट के साथ बँधी हुई थी करारे नोटों की गड्डियाँ। मुझे दूरी के बारे में जो जानकारी दी गयी थी और मेरी जो चाल थी, उनसे मैंने सूर्यास्त के कुछ देर बाद तक ग्लेनडेल पहुँच जाने का अनुमान लगा रखा था। अगर किसी अनजाने कारण से देर हो जाय और मुझे रात बितानी पड़ जाय, तो इसके लिए भी मैं तैयार था, क्योंकि मेरे पास 'कैम्पिंग' का अच्छा-खासा अनुभव था। और फिर, मेरा वहाँ जो काम था, वह कल दोपहर के बाद था– सुबह जल्दी पहुँचना कोई जरूरी नहीं था।

यह मौसम ही था, जिसने मेरी योजनाओं पर पानी फेरा। जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ता गया, उसने सबसे घने छायादार पेड़ों को भी झुलसाना तथा हर कदम पर मेरी ऊर्जा को निचोड़ना शुरू कर दिया। दोपहर तक मेरे कपड़े पसीने से तर हो रहे थे और तमाम संकल्पों के बावजूद मुझे लगा कि मैं लड़खड़ाने लगा हूँ। जब मैंने घने जंगल में प्रवेश किया, तो पाया कि झाड़-झंखाड़ से रास्ता अवरुद्ध हो

रहा था; कहीं-कहीं तो रास्ता बोलकर कुछ था ही नहीं। साफ लग रहा था कि हफ्तों– शायद महीनों– से कोई भी इस रास्ते से नहीं गुजरा था; मुझे तो चिन्ता होने लगी कि मैं समय पर पहुँच पाऊँगा कि नहीं और मेरा काम हो पायेगा कि नहीं।

इस बीच भूख भी जोरों की लग गयी थी। मैंने इधर-उधर नजरें दौड़ाकर घनी छाया खोजी और खाना खाने बैठ गया, जिसे कि होटल वाले ने मेरे लिए बाँध दिया था। खाने में कुछ ठण्डे सैण्डविच, बासी पाई और बहुत ही हल्की किस्म की शराब की एक बोतल थी। बेशक, खाना कुछ खास नहीं था, लेकिन मेरे-जैसे गर्मी से थके-हारे व्यक्ति के लिए यह काफी था।

गर्मी इतनी थी कि धूम्रपान से कोई राहत नहीं मिलने वाली थी, इसलिए मैंने अपना पाइप नहीं निकाला। इसके बजाय खाना खत्म करके मैं पेड़ के नीचे पैर-हाथ फैलाकर लम्बा लेट गया; सोचा– सफर का अन्तिम चरण शुरू करने से पहले थोड़ा सुस्ता ही लिया जाय। मुझे लगता है कि मैंने शराब पीकर मूर्खता की, क्योंकि भले ही वह हल्की शराब थी, फिर भी उस उमस भरी दोपहर में उसने अपना काम कर ही दिया। मैं बस थोड़ी देर आराम करना चाह रहा था, लेकिन बिना जम्हाई की चेतावनी के मैं गहरी नीन्द में सो गया।

जंगल में बँगला

जब मेरी आँखें खुलीं, तो गोधूली की बेला ढलने वाली थी। हवा का एक झोंका मेरे गालों से टकराया और मैं पूरी तरह सजग होकर उठ बैठा। आकाश की ओर देखने पर मैंने पाया कि तूफान की घोषणा करते हुए घने काले बादल तेजी से दौड़ लगा रहे थे। इतना तो मैं समझ ही गया कि अब सुबह से पहले मैं ग्लेनडेल पहुँचने से रहा, लेकिन बुरे मौसम में जंगल में रात बिताने की कल्पना से मेरा मन कड़वा हो गया– जंगल में रात में कैम्पिंग का अनुभव तो मुझे था, लेकिन अकेले कैम्पिंग करने का यह मेरा पहला अवसर होने वाला था। मैंने तुरन्त फैसला किया कि तूफान के आने से पहले जंगल में आगे बढ़कर जरा देख लिया जाय कि कहीं सिर छुपाने लायक जगह है या नहीं।

जंगल में अन्धेरा बढ़ गया था– जैसे, काले कम्बल से इसे ढाँप दिया गया हो। नीचे उड़ते हुए काले बादल डरावने लगने लगे और हवाएं सांय-सांय कर बहने लगीं। बिजली की एक कौंध ने अन्धेरे आकाश को पल भर के लिए आलोकित किया और उसके पीछे-पीछे गड़गड़ाहट गूँज उठी। मेरे हाथ पर पानी की एक बूँद गिरी; हालाँकि आगे बढ़ना मैंने जारी रखा, लेकिन कोई ओट पाने की उम्मीद मैंने छोड़ दी। एक और पल, और मुझे रोशनी की झलक दिखायी पड़ी– पेड़ों के बीच से अन्धेरे में किसी खिड़की से आती हुई रोशनी! सिर छुपाने की व्यग्रता में मैं उस रोशनी की ओर तेजी से बढ़ गया– काश, कि मैं उल्टे पाँव भाग खड़ा हुआ होता!

सामने झाड़-झंखार की बेतरतीब सफाई और घने जंगल की पृष्ठभूमि के साथ मेरे सामने एक बँगलानुमा मकान खड़ा था। मैंने छोटी-मोटी झोपड़ी की उम्मीद की थी, लेकिन अपने सामने एक साफ-सुथरा, खूबसूरत, दुमंजिला बँगला देखकर मैं हैरत में पड़ गया। बँगले की वास्तुकला कोई सत्तर साल पुरानी थी और भले इसे मरम्मत की जरुरत थी, लेकिन साफ नजर आ रहा था कि बहुत ही सलीके से इसका रख-रखाव किया जाता रहा है। निचली खिड़कियों में से एक के शीशे से चमकदार रोशनी बाहर आ रही थी। पानी की दूसरी बूँद मेरे हाथ पर गिरी और बिना कुछ और सोचे मैं कटी-छँटी झाड़ियों वाले मैदान को पार करके बँगले तक पहुँच गया। सीढ़ियाँ चढ़कर मैंने जोर से दरवाजा थपथपाया।

आश्चर्यजनक तत्परता के साथ मेरी दस्तक के जवाब में एक शब्द का धीर-गम्भीर और खुशमिजाज उत्तर आया, "आईए!"

दरवाजे को धकेलकर मैं धुंधली रोशनी वाले एक हॉल में दाखिल हुआ। हॉल में रोशनी दाहिने वाले कमरे के खुले दरवाजे से आ रही थी, उस कमरे में आलमारियों में किताबें सजी हुई थीं। बाहर से उसी कमरे की खिड़की तेज रोशनी में चमकती नजर आ रही थी। अन्दर आने के बाद जैसे ही मैंने अपने पीछे दरवाजे के पल्लों को सटाया, खास तरह की एक महक मेरे नथुनों से टकरायी। महक इतनी हल्की थी कि इसे पहचान पाना मुश्किल था, फिर भी मुझे यह पशुओं से आने वाली महक-जैसी लगी। मुझे लगा कि मेरे मेजबान कोई शिकारी या बहेलिया होंगे, जो यहीं आस-पास के जंगलों में पशु-पक्षियों का शिकार करते होंगे या उन्हें फन्दे में फँसाते होंगे।